मूल्य : एक प्रति ` 0.50
वार्षिक ` 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

उत्तर - साक्षरताकर्मियों के लिए

अगस्त 2012 वर्ष 17, अंक 8

राष्ट्रीय पुस्तकालय दिवस–12 अगस्त

बहुत कम लोगों को पता होगा कि लेखक, अकादेमिक, गणितज्ञ एवं सर्वोपरि पुस्तकालय-विज्ञानी **श्री एस.आर. रंगनाथन** भारत में पुस्तकालय विज्ञान के प्रणेता हैं। उनका जन्म 9 अगस्त, 1892 को सिरकाझी, तमिलनाडु में हुआ था। पुस्तकालय विज्ञान के क्षेत्र में विशिष्ट अध्ययन हेतु वे लंदन गए थे। वह 12 अगस्त का दिन था। इसी उपलक्ष्य में भारत में 12 अगस्त को **राष्ट्रीय पुस्तकालय दिवस** के रूप में मनाया जाता है। वे देश के प्रथम विश्वविद्यालीय पुस्तकालयाध्यक्ष थे। उनकी नियुक्ति मद्रास विश्वविद्यालय में 1924 में हुई थी। उन्हें भारत में पुस्तकालय विज्ञान, प्रलेखन तथा सूचना विज्ञान का जनक माना जाता है। रंगनाथन का इस क्षेत्र में सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान 'पुस्तकालय विज्ञान के पाँच सूत्र' हैं। वे विश्लेष-संश्लेषमूलक वर्गीकरण प्रणाली, कोलोन वर्गीकरण के विकासकर्ता भी माने जाते हैं।

श्री रंगनाथन बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में भी विश्वविद्यालीय पुस्तकालयाध्यक्ष एवं प्रोफेसर रहे (1945-47)। सन् 1947 से 1955 तक दिल्ली विश्वविद्यालय में पुस्तकालय विज्ञान के मानद प्रोफेसर रहे। वे भारतीय पुस्तकालय संगठन के 1944 से 1953 तक अध्यक्ष भी रहे। 1957 में उन्हें सूचना एवं प्रलेखन के अंतरराष्ट्रीय परिषद का एक मानद सदस्य नियुक्त किया गया था।

गणित में मन रमाने वाले रंगनाथन के बारे में यह एक विचित्र किंतु सत्य तथ्य है कि पहले वे पुस्तकालय क्षेत्र में आने के प्रति अनिच्छुक थे। जब उन्हें मद्रास विश्वविद्यालय में पुस्तकालयाध्यक्ष की नौकरी मिल गई तब 'असहनीय कार्य स्थिति' के मद्देनजर उन्होंने गणित के प्राध्यापक की अपनी पुरानी नौकरी में जाने का निवेदन किया। तब उन्हें पुस्तकालय क्षेत्र का अध्ययन करने हेतु लंदन भेजा गया, जहाँ से लौटकर आने पर उनका मन एकदम बदल गया और वे आगामी 20 वर्षों तक वहाँ पुस्तकालयाध्यक्ष बने रहे तथा पुस्तकालय विज्ञान में तरह-तरह के नए प्रयोग और नई प्रविधियाँ ईजाद करते रहे। उस अवधि में उन्होंने मद्रास लाइब्रेरी एसोसिएशन की स्थापना में सहयोग दिया तथा पूरे देश में निःशुल्क सार्वजनिक पुस्तकालयों की स्थापना के लिए सक्रिय योगदान

अगले पृष्ठ में जारी...

पढ़ेंगे, लिखेंगे, आगे बढ़ेंगे
डगर है यही, इसी पर चलेंगे।

भू-लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला-स्थल कहाँ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ
संपूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है?
उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन? भारतवर्ष है।
हाँ, वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है
ऐसा पुरातन देश कोई विश्व में क्या और है?
भगवान की भवभूतियों का यह प्रथम भाण्डार है
विधि ने किया नर सृष्टि का पहले यहीं विस्तार है।

मैथिलीशरण गुप्त
जन्मदिन
3 अगस्त

भारत में महिला साक्षरता और महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना कई समस्याओं का हल है।...भारत के लिए महिला साक्षरता परिवर्तन का सबसे बड़ा माध्यम बन सकती है।

–अमर्त्य सेन, नोबेल पुरस्कार से सम्मानित भारतीय अर्थशास्त्री

किया। मद्रास विश्वविद्यालय में कार्य करते हुए 1931 में पुस्तकालय विज्ञान के पाँच सूत्र तथा 1933 में कोलोन वर्गीकरण प्रणाली उनके दो सबसे बड़े धरोहर हैं। पुस्तकालय के क्षेत्र में किए गए उनके कार्यों की वजह से अधिकतम लोगों को शिक्षित करने, सबों तक जानकारी पहुँचाने, यहाँ तक कि स्त्रियों एवं वंचित/अल्पसंख्यकों तक भी ज्ञान पहुँचाने के उनके उद्देश्य को बड़ी कामयाबी मिली। बनारस तथा दिल्ली में भी अपनी नौकरी के दरमियान उन्होंने पुस्तकालय विज्ञान के क्षेत्र में नित नूतन और अभिनव अनुसंधान और नए-नए प्रयोग किए। 1955 व 1957 की अवधि में वे ज्यूरिख, स्विटजरलैंड में रहे, जहाँ उन्होंने यूरोप के पुस्तकालय समुदाय के लोगों से अपना संपर्क बढ़ाया। वहाँ से लौटकर वे अपने गृहनगर, बंगलोर में रहने लगे। अंततः वहीं 1972 में उनका निधन हो गया।

रंगनाथन की अंतिम महत्वपूर्ण उपलब्धि थी इंडियन स्टैटिसटिकल इंस्टीट्यूट, बंगलोर में एक विभाग एवं शोध केंद्र के रूप में प्रलेखन शोध एवं प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना (1962), जहाँ वे पाँच वर्षों तक मानद निदेशक रहे। 1965 में भारत सरकार ने उन्हें उनके पुस्तकालय क्षेत्र में महत्तर योगदान हेतु 'नेशनल रिसर्च प्रोफेसर' की उपाधि से विभूषित किया। इससे पूर्व, 1957 में उन्हें पद्मश्री प्रदान किया गया था।

रंगनाथन ने आत्मकथा भी लिखी थी, जिसका नाम था—ए लाइब्रेरियन लुक्स बैक। वैसे, उन्होंने 50 से अधिक पुस्तकें तथा 2000 के लगभग शोध लेख, सूचना लेख या टिप्पणियाँ लिखीं। पुस्तकालय विज्ञान के क्षेत्र में उन्हें द्विबिंदु वर्गीकरण के लिए नहीं अपितु इसके आधारभूत सिद्धांतों के लिए अधिक याद किया जाएगा। *पुस्तकालय विज्ञान के पाँच सूत्र :*

1. पुस्तकें उपयोग के लिए हैं। 2. हर पाठक उसकी पुस्तक।
3. हर पुस्तक उसका पाठक। 4. पाठक का समय बचाएँ।
5. पुस्तकालय एक बढ़ता संगठन है।

जयंती :
15 अगस्त पर विशेष

श्री अरविंद : शिक्षा के माध्यम से पूर्ण मनुष्यत्व की चाह

*महर्षि या योगी **अरविंद** को आधुनिक भारत का निर्माता कहा जाता है। उन्हें ऐसा यूँ ही नहीं कहा जाता है। देश, समाज, शिक्षा और साहित्य आदि अनेक क्षेत्रों में उनका अन्यतम अवदान है। यहाँ हम उनके शिक्षा के क्षेत्र में योगदान को याद कर रहे हैं।* **—संपा.**

श्री अरविंद ने शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है। बड़ौदा में रहते हुए ही उन्होंने प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति के अनुरूप शिक्षा देना प्रारंभ कर दिया था जिसका अर्थ था कि शिक्षक श्रमजीवी की तरह छात्रों को शिक्षा देकर गुरु एवं शिष्य के संबंधों को अपनाता था जिससे गुरु एवं शिष्य में निकटता का संबंध स्थापित हो सके। बंगाल की एजुकेशनल सोसायटी के माध्यम से एवं स्वयं सक्रिय राजनीति में आने के बाद वह भारत में एक ऐसी शिक्षा प्रणाली का निर्माण करना चाहते थे जो ब्रिटिश नौकरशाही के प्रभाव से मुक्त हो, आत्मनिर्भर हो और राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण कर सके। छात्रों को देश प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत किया जा सके और सरकारी नौकरियों के प्रति उनके झुकाव को कम किया जा सके। इन स्कूलों का मुख्य उद्देश्य एक ओर ऐसे विद्यार्थियों को पनाह देना था जिन्हें देशभक्ति के कारण स्कूलों से निष्कासित कर दिया गया हो और शिक्षा संस्थाओं के द्वार उनके लिए बंद हो गए हों तथा दूसरी ओर मातृभूमि के प्रति देशभक्ति जगाने और स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए सर्वस्व न्यौछावर करना। श्री अरविंद राष्ट्रीय विद्यालय के माध्यम से जापान के समान देश की शिक्षा प्रणाली को बनाना चाहते थे जहाँ प्राचीनता एवं आधुनिकता का संगम था। वह ठीक इसी प्रकार भारत के प्राचीन धर्म, दर्शन और परंपराओं को सुरक्षित रखना चाहते थे और दूसरी ओर वैज्ञानिक प्रगति से होने वाले लाभों से भारत का आधुनिकीकरण करना चाहते थे। इसलिए वह डिग्री और प्रमाणपत्रों के पक्ष में नहीं थे। शिक्षा प्रसार में वह शिक्षा के उस प्रमुख उद्देश्य को लेकर चले, जिसमें अंधकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश प्रदान करके अज्ञानता को समाप्त करना था। मनुष्य को पूर्ण मनुष्य बनाना और उसकी चौमुखी प्रतिभाओं में विकास करना, उनकी शिक्षा प्रसार का एकमात्र उद्देश्य था। उनके प्रयास से केवल बंगाल ही नहीं जागा बल्कि राष्ट्रीय शिक्षा की लहर देश के कोने-कोने में फैल गई, जिसने आगे काँग्रेस आंदोलन को बहुत बड़ी संख्या में स्वयंसेवक प्रदान किए। श्री अरविंद और उनकी राष्ट्रीय शिक्षा की नीति ने स्वतंत्रता के लिए स्वयंसेवकों की एक सेना तैयार की जिसके सक्रिय सहयोग से भारत को आजादी प्राप्त हो सकी।

ज्ञान ऊर्जा है तो एकता मजबूती है, लेकिन जज्बा इन सबसे ऊपर, सब कुछ है।

—नील आर्मस्ट्रॉन्ग, प्रथम चंद्रयात्री (जन्मदिन, 5 अगस्त)

मैं हमेशा कल्पना करता हूँ कि स्वर्ग पुस्तकालय का ही एक रूप होगा।

—जॉर्ज लुइस बॉर्गेस

अगस्त 1942 का हिंद छोड़ो आंदोलन

'हिंद छोड़ो' की लड़ाई बिलकुल अलग तरह की थी। पहले के आंदोलन में तो यदि कानून तोड़ने पर सरकार पकड़ ले तो जेल में जाना होता था, जबकि इस बार 'जेल भरो' का कार्यक्रम नहीं था।

इस बार गाँधी जी ने 'हिंद छोड़ो' और 'करो या मरो' का नारा दिया था। गाँधी जी के प्रस्ताव व भाषणों से यही झलक मिलती थी कि इस बार यहाँ पर ऐसी परिस्थिति पैदा करनी है जिससे अँग्रेज यहाँ से सदा के लिए भाग ही जाएँ। और इस परिस्थिति को पैदा करने के लिए सबको जान पर खेलना था।

इस आंदोलन में युवा स्त्रियाँ, मजदूर, किसान, विद्यार्थी, ग्रामीण सभी शामिल थे। यदि यह कहा जाए कि हरेक वर्ग के लोग इस आंदोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने के लिए तैयार थे तो अनुचित न होगा।

देसी राज्यों के लोगों का सहयोग भी बहुत प्रशंसनीय था। भावनगर, राजकोट, मोरबी, हैदराबाद, मैसूर, त्रावणकोर, दरभंगा, कोल्हापुर आदि देसी राज्य भी अँग्रेजों को भगाने के लिए ही इस जंग में जी-जान से जुड़े थे।

इस आंदोलन में उषा महेता अपनी जान जोखिम में डालकर नियमित रूप से किसी गुप्त रेडियो केंद्र से सरकार विरोधी और राज्य को पलट देने में सहायता करने वाले भाषण और समाचार दे रही थीं। बम फेंकने के कार्यक्रम से जुड़ी हुई काबेरी बहन दिवेचा तोड़फोड़ की योजना बनातीं और आंदोलनकारियों की रहनुमाई करती थीं। वह ढाई वर्ष तक पुलिस से छिपकर उन्हें चकमा देती रही थीं।

अरुणा आसफअली को पकड़ने के लिए सरकार ने बहुत बड़े इनाम की घोषणा की। खुर्शीद बहन नवरोज ने अपनी जान खतरे में डालकर बिहार की कोयले की खानों में हड़ताल करवाई। कमला देवा चट्टोपाध्याय ने कर्नाटक में स्त्रियों की छापामार टुकड़ियाँ तैयार करवाई व और भी कई जोखिम भरे काम किए।

सरकार के कर्मचारी अपनी नौकरियों में बने रहकर गुप्त रूप से इस आंदोलन में सहायता करते थे। सरकार जिन्हें पकड़ने के लिए बड़ी-बड़ी रकम के इनामों की घोषणा करती थी, ऐसे आजादी के सिपाहियों को ये सरकारी कर्मचारी अपने घरों में छिपाकर रखते थे। अरुणा आसफअली के लिए भी एक बड़े इनाम की घोषणा की गई थी। उन्हें सेना के विमान का चालक बीजू पटनायक बार-बार एक जगह से दूसरी जगह ले जाता था। जिन सत्याग्रहियों को सरकार भयंकर गुनाह के लिए पकड़ लेती थी, सरकारी वकील उनके मुकदमे अदालत में इस प्रकार प्रस्तुत करते थे कि बहुत से सत्याग्रही तो अदालत में ही छूट जाते थे।

ट्रस्ट से प्रकाशित पुस्तक **'हिंद छोड़ो आंदोलन'** से एक अंश। **–संपा.**

'जय हिंद' का नारा

–अभिनव नारायण तिवारी, *कानपुर, उ.प्र.*

सुभाष चंद्र बोस ने विदेश में रहते हुए जो संगठन बनाया उसके दो नारे बेहद प्रसिद्ध हैं। वे थे–दिल्ली चलो और जय हिंद। जनसामान्य की धारणा में जय हिंद के प्रणेता सुभाष चंद्र बोस हैं, किंतु सच यह है कि केवल दिल्ली चलो का नारा उनका है। जय हिंद का उद्घोष सर्वप्रथम केरल में जन्मे स्वाधीनता सेनानी छात्र नेता चम्पक रमण पिल्लई ने किया था। वही इसके प्रणेता थे। पिल्लई का जन्म 1891 में केरल में हुआ था। उन्होंने छात्र जीवन में ही अँग्रेजों के विरुद्ध हुए आंदोलनों में भाग लिया था और जेल भी गए थे। वे जय हिंद का उद्घोष करते हुए जेल गए थे। पिल्लई की 1933 में ऑस्ट्रिया की राजधानी विएना में सुभाष बोस से भेंट हुई थी। तब पिल्लई ने 'जय हिंद' कहकर सुभाष का अभिवादन किया था। सुभाष बोस को यह अभिवादन इतना प्रिय लगा कि उन्होंने इसे आजाद हिंद फौज का मुख्य नारा बना दिया। तभी से यह तय हुआ कि आपस में मिलने-जुलने पर सभी फौजी/अधिकारी एक-दूसरे को जय हिंद बोलकर अभिवादन करेंगे।

सन् 1946 में देश में अंतरिम सरकार की स्थापना के समय पं. नेहरू ने इस नारे को स्वीकार किया। प्रथम स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त, 1947 को लाल किले पर ध्वजारोहण के बाद जय हिंद का उद्घोष किया गया था। इसके बाद से पं. नेहरू उपस्थित जनसमूह से तीन बार जय हिंद का नारा लगाने को कहने लगे। स्वाधीनता वर्ष में ही 31 दिसंबर को भारत सरकार के डाक विभाग पर भी 'जय हिंद' की मोहर लगाई गई थी।

विश्व स्तनपान सप्ताह : नवजात शिशुओं को सुरक्षित तरीके से स्तनपान कराने के प्रति चेतना जगाने और वैश्विक स्तनपान संस्कृति विकसित करने के उद्देश्य से 1992 से विश्व स्तनपान सप्ताह प्रत्येक वर्ष **1 से 7 अगस्त** के बीच मनाया जाता है। इसे सबसे पहले वर्ल्ड एलायंस फॉर ब्रेस्टफीडिंग एक्शन (WABA) ने मनाया। इसे संयुक्त राष्ट्र की दो संस्थाएँ–WHO तथा UNICEF भी अपना समर्थन देती हैं। इस सप्ताह के दौरान शिशुओं को स्तनपान कराने के महत्व के बारे में माताओं को जानकारी दी जाती है। यह बात विशेष जोर देकर बताई जाती है कि शिशु के जन्म के प्रथम छह महीने तक स्तनपान कराने से शिशु अनेक जानलेवा बीमारियों से बच जाता है।

राष्ट्रीय पुस्तकालय दिवस के अवसर पर काव्य प्रस्तुति

पुस्तकों के बीच

राजेंद्र उपाध्याय, *पंडारा रोड, नई दिल्ली*

कभी-कभी मैं जाता हूँ लाइब्रेरी में
जहाँ लोग चुप रहते हैं
मगर किताबें बोलती हैं–हमें पढ़ो, हमें पढ़ो
हमें पढ़े बगैर मत जाना तुम।

तुम्हें पढ़ने के लिए मुझे चाहिए
लगभग उतने ही बरस
जितने तुम्हें लिखने में किसी को लगे होंगे।

कभी-कभी मैं जाता हूँ लाइब्रेरी में
लाता हूँ किताबें
जो पहले ही पढ़ी जा चुकी होती है
एक बार नहीं, कई-कई बार पढ़ी जा चुकी होती है।

मुझे अच्छी लगती हैं वे किताबें
जो एक बार नहीं, कई-कई बार पढ़ी जा चुकी होती है
उनमें होती है उँगलियों और अँगूठों की गंध
कामकाजी लोगों के अमिट हस्ताक्षर
जो अकसर पसीने से या कोयले से किए होते हैं।

मुझे याद आती है उन चेहरों की
जो भले ही खूबसूरत न हों
लेकिन अच्छे भले लगते हैं पढ़ते वक्त
उन टेढ़े-मेढ़े नाक वाले चेचक के दाग वाले चेहरों पर
अकसर कैसी तो चमक आ जाती है
जब वे एक उपन्यास में पाताल तक डूबे होते हैं।

एक बच्चा दुगुना खुबसूरत हो जाता है
जब वह एक किताब के परी संसार में खोया होता है
एक बच्ची जब खाना-पीना सब भूल
एक किताब में खो जाती है
तो वह 'एलिस इन वंडरलैंड' हो जाती है।

वे भले ही स्त्री या पुरुष हों
गँवार हों या पढ़े-लिखे हों
किसी भी जात-पांत के मानने वाले हों
वो उस वक्त दुनिया के सबसे पवित्र
और सबसे उजले काम में लगे होते हैं।
वे उस वक्त गरीब होकर भी
सबसे अमीर होते हैं
जब वे एक किताब के साथ सफर करते हैं
एक किताब की हसीन सुबह में
उनकी सारी अंधियारी रातें कट जाती हैं।

अलमारियों में कैद किताबें

अशोक 'आनन', *मक्सी, शाजापुर, म.प्र.*

पुस्तकालयों की अलमारियों में सजी-सँवरी
बड़े करीने से जमी हुई
किताबों को देख
बच्चे के मन में ख्याल आता है–
काश! उसे मिली होतीं
वे किताबें पढ़ने के लिए
जिन्हें पढ़कर
उसने सीखी होतीं
ज्ञान की कुछ बातें
सँवारा होता
अपना जीवन।
किताबें–
जिन्हें बमुश्किल मिलता है आज
कोई पाठक
ऐसे में उन्हें
अलमारियों में कैद कर
बना देना सजावटी वस्तु
कहाँ की है बुद्धिमानी?
वे भी
हमारी तरह
खुली हवा में लेना चाहती हैं साँसें
बनाकर अपने पाठकों से
पठनीयता का एक आत्मीय रिश्ता
किताबें–
जिनका घुटता है दम अलमारियों में।

स्वाधीनता दिवस के अवसर पर काव्य प्रस्तुति

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा

श्यामलाल गुप्त पार्षद

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
झंडा ऊँचा रहे हमारा
सदा शक्ति सरसाने वाला,
वीरों को हरषाने वाला,
प्रेम सुधा बरसाने वाला
मातृभूमि का तन मन सारा
झंडा ऊँचा रहे हमारा।

लाल रंग बजरंग बली का
हरा अहले इस्लाम अली का
श्वेत सभी धर्मों की टीका
एक हुआ रंग न्यारा-न्यारा
झंडा ऊँचा रहे हमारा।

है चरखे का चित्र सँवारा
मानो चक्र सुदर्शन प्यारा
हरे देश का संकट सारा
है यह सच्चा भाव हमारा
झंडा ऊँचा रहे हमारा।

स्वतंत्रता के भीषण रण में
लखकर जोश बढ़े क्षण भर में
काँपे शत्रु देखकर मन में
मिट जाए भय संकट सारा
झंडा ऊँचा रहे हमारा।

इस झंडे के नीचे निर्भय
ले स्वराज्य का अविचल निश्चय
बोलो भारत माता की जय
स्वतंत्रता है ध्येय हमारा
झंडा ऊँचा रहे हमारा।

आओ प्यारे वीरो आओ
देश धर्म पर बलि बलि जाओ
एक साथ सब मिलकर गाओ
प्यारा भारत देश हमारा
झंडा ऊँचा रहे हमारा।

शान न इसकी जाने पाए
चाहे जान भले ही जाए
विश्व-विजय करके दिखलाएँ
तब होवे प्रण पूर्ण हमारा
झंडा ऊँचा रहे हमारा।

यह मूल गीत है।
रचना काल 1924। ट्रस्ट की पुस्तक ***'स्वतंत्रता आंदोलन के गीत'*** *से उद्धृत।* **—संपा.**

तिरंगे की शान

कृष्ण कुमार यादव

तीन रंगों का प्यारा झंडा
राष्ट्रीय ध्वज है कहलाता
केसरिया, सफेद और हरा
आन-बान से यह लहराता।

चौबीस तीलियों से बना चक्र
प्रगति की राह है दिखाता
समृद्धि और विकास के सपने
ले ऊँचे नभ में सदा फहराता।

अमर शहीदों की वीरता और
बलिदान की याद दिलाता
कैसे स्वयं को किया समर्पित
इसकी झलक दिखलाता।

आओ हम यह खाएँ कसम
शान न होगी इसकी कम
वीरों के बलिदानों को
व्यर्थ न जाने देंगे हम।

इलाहाबाद, उ.प्र.

ज्ञानात्मक दर्पण है पुस्तक
सृजनात्मक अर्पण है पुस्तक
संवेदित मन के भावों का
शब्दात्मक तर्पण है पुस्तक।
डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय, कोटा, राजस्थान

पुस्तक का पर्याय न दूजा
पढ़कर तो तोता भी कूजा
टर्र-टर्र करने से अच्छा
शब्द-शब्द की करना पूजा।
गोपीनाथ कालभोर, खंडवा, म.प्र.

पुस्तकों की दुनिया
रंग-बिरंगी, प्यारी-प्यारी
उँगली पकड़ दिखाती रास्ता
सुख का, समृद्धि का, आनंद का।
सत्यनारायण भटनागर, रतलाम, म.प्र.

गँवाओ नहीं
अनमोल जीवन
किताब पढ़!
सिद्धेश्वर, पटना, बिहार

ज्ञान की मशाल हैं किताबें
मन की बंद खिड़की खोलती हैं
अंतर्मन को रौशन करती हैं।
डॉ. सुधा जैन, पंचकूला, हरियाणा

अच्छी पुस्तक
हर पल की साथी
है सच्ची पुस्तक।
जयभगवान गुप्त, फरीदाबाद, हरियाणा

विद्या वही है जिससे मनुष्य अपने को पहचाने। इसका अर्थ आत्मज्ञान हुआ। —महात्मा गाँधी

पाठकीय प्रतिक्रिया

- **जुलाई 2012, सा. सं. :** प्रेमचंद पर स्मरणीय सामग्री दी गई है। 'जनसंख्या और साक्षरता' शीर्षक लघु लेख में जानकारी विशद रूप में प्रस्तुत की गई है, जो शिक्षाप्रद है। एक जुलाई—डॉक्टर्स डे पर दी गई सामग्री भी महत्वपूर्ण लगी। कविताएँ मनभावन और बोधगम्य हैं। 'नवसाक्षरों के लिए' पृष्ठ पर प्रस्तुत कविताएँ प्रेरणादायी हैं। **सुगन चंद जैन 'नलिन',** गुना, म.प्र.
- **जून 2012 :** पर्यावरण पर सरल भाषा में बहुत ही सुंदर रचनाएँ पढ़ने को मिलीं। आपके शानदार संपादन ने **सा. सं.** को पठनीय और संग्रहणीय बना दिया है। **अहद 'प्रकाश',** भोपाल, म.प्र.
- पर्यावरण एवं शिक्षा पर अत्यंत ही रोचक कविताएँ पढ़कर प्रसन्नता हुई। लघुकथा, बोधकथा भी प्रेरक हैं। साक्षरता प्रसार की दिशा में पत्रिका मील का पत्थर बनती जा रही है।
आनंद बिल्थरे, बालाघाट, म.प्र.
- माह की विशेष घटनाओं, प्रेरक व्यक्तित्व, प्रेरक वाक्य और शिक्षा-साक्षरता पर कवितापूर्ण प्रस्तुति से पत्रिका विशिष्ट बन गई है। प्रसंगानुकूल रचनाएँ पत्रिका की खासियत है। पत्रिका का हर अंक संग्रहीत कर रखना अब परम आवश्यक सिद्ध हो रहा है।
शंभु प्रसाद भट्ट 'स्नेहिल', गोपेश्वर, चमोली, उत्तराखंड
- **सा. सं.** का जून अंक भिलाई में देखा। बड़ी ज्ञानप्रद है और 'गागर में सागर' की उक्ति को सार्थक करती है।
त्र्यम्बक शर्मा, रायपुर, छत्तीसगढ़
- जनजागरण हेतु शिक्षा-साक्षरता-साहित्य के प्रचार-प्रसार में दिया जा रहा योगदान सराहनीय है।
ठाकुरदास कुल्हारा, जबलपुर, म.प्र.
- मुखपृष्ठ पर 'दादा भाई नौरोजी' लेख जानकारी बढ़ाने वाला था। पर्यावरण बोधकथा तथा कविता 'साक्षर हो देश हमारा' अच्छी लगी। **प्रो. शामलाल कौशल,** रोहतक, हरियाणा
- **मई 2012 :** महान नेताओं के जन्म/पुण्य तिथियों पर परिचय पढ़कर मन प्रसन्नता से भर उठा। नवसाक्षरों के अलावा यह बच्चों व प्रबुद्ध पाठकों के लिए भी उपयोगी पत्रिका साबित हो रही है। 'नुक्करगीत बनाम साक्षरता' एवं 'साक्षरता अभियान' कविताएँ अच्छी लगीं। दरअसल, यह पत्रिका वाटिका में खिला वैसा फूल है जिसकी महक पूरे परिवेश को महमह कर देता है। एक सुझाव : पत्रिका स्कूलों में भी भेजें। बच्चे इसे पढ़कर साहित्य में रुचि लेंगे और साहित्यकारों द्वारा कहे गए वचनों को जीवन में उतारने की कोशिश करेंगे। आपका यह प्रयास लघुतम ही सही, पर महान है। कृपया रचनाकारों का पूरा पता दें।
डॉ. पी.आर. वासुदेवन 'शेष', चेन्नई, तमिलनाडु
- निरक्षरों के लिए है, साक्षरता संवाद
साक्षरों के लिए भी साक्षरता संवाद
नहीं बना पाएगा बेवकूफ अब कोई
गर है आपके पास, साक्षरता संवाद
पढ़ो-लिखो और जीवन को जानो
सीखो जो सिखाता, साक्षरता संवाद
भैंस के बराबर नहीं काला अक्षर
हाथ है गर आपके, साक्षरता संवाद
आपके आस-पास ही होगा 'ओम'
अक्षर-अक्षर से भरा साक्षरता संवाद।
ओम उपाध्याय, *भोपाल, म.प्र.*
- किताबों से दोस्ती / पन्नों से प्यार
सफल जीवन का / यही है सार।
डॉ. नरेंद्र नाथ लाहा, ग्वालियर, म.प्र.

कृपया पत्रिका के अनुकूल शिक्षा, साक्षरता, पुस्तक एवं पठन-पाठन से संदर्भित रचनाएं ही भेजें—प्रेरक, उद्बोधक। साफ एवं पठनीय शब्दों में लिखें, रचनाएं संक्षिप्त भेजें। बाल रचनाएं कृपया ट्रस्ट की 'पाठक मंच बुलेटिन' पत्रिका में भेजें। —*संपा.*

आह्वान

प्रो. शरद नारायण खरे, *मंडला, म.प्र.*

अक्षर को अपनाना होगा
उजियारे को लाना होगा।
उजियारा जीवन में लाकर
जीवन सफल बनाना होगा।
जीवन सफल बनाकर अब तो
गीत खुशी के गाना होगा।
गीत खुशी के गाकर प्रियवर
आगे अब बढ़ जाना होगा।
आगे बढ़कर अब हम सबको
नवल जहान बसाना होगा।
नवल जहान बसाकर बंधू
हर पल अब हरसाना होगा।

गिनती का गीत

अशोक 'आनन'

देखो, **एक** मदारी आया
संग में **दो** जमूरे लाया।
डमरू **तीन** मिनट बजाया
चार गाँव में खेल दिखाया।
गोले मुँह से **पाँच** निकाले
हाथों से **छह** बार उछाले।
सात आम के पेड़ उगाए
पेड़े उसने **आठ** बनाए।
बंदर को **नौ** बार नचाया
दस मिनट तक खेल दिखाया।

मक्सी, शाजापुर, म.प्र.

साक्षरता

विनोद चंद्र पाण्डेय 'विनोद'

सभी साक्षर हों, करें सब पढ़ाई।

न रह जाए अब व्यक्ति कोई निरक्षर
रहे ज्ञान-विज्ञान का गूँजता स्वर
सभी हों सुशिक्षित, सभी हों प्रशिक्षित
इसी में भरी है सभी की भलाई
सभी साक्षर हों, करें सब पढ़ाई।

न जो अक्षरों को कभी सीख पाता
जगत में बड़ा कष्ट वह है उठाता
उसे दे न जाने कहाँ कौन धोखा
करें लोग उसकी हमेशा बुराई
सभी साक्षर हों, करें सब पढ़ाई।

सभी के लिए एक वरदान विद्या
सभी को करे पूर्ण गुणवान विद्या
सभी को करे योग्य विद्वान विद्या
पढ़ें जो वही प्राप्त करते बड़ाई
सभी साक्षर हों, करें सब पढ़ाई।

बड़े ध्यान से जो लिखेंगे-पढ़ेंगे
वही लोग पथ पर प्रगति के बढ़ेंगे
उन्हीं को मिलेगी सफलता सदा ही
करेंगे वही काम पाकर कमाई
सभी साक्षर हों, करें सब पढ़ाई।

लखनऊ, उ.प्र.

सीख

रामप्रसाद शर्मा 'प्रसाद'

सोच-समझकर
कदम बढ़ाना
अनपढ़ तुमको
न रह जाना।
समाज पर न
पड़ना भारी
अनपढ़ता न
बने लाचारी।
उपहास नहीं
कोई उड़ाए
अँगुली भी न
कोई उठाए।
ज्ञान-पिटारी
भरकर रखना
फल शिक्षा के
तुम भी चखना।
अक्षर-दीप तुम
सदा जगाना
निरक्षरता-तम
दूर भगाना।
दुख-क्लेश भी
झट मिट जाए
बच्चा-बूढ़ा
सब पढ़ जाए।

सिहाल, कांगड़ा, हि.प्र.

R. N. I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4078/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2012-14
Mailing date 25/26 same month
Date of publication 15/08/2012

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन एवं व्यक्तित्व पर ने.बु. ट्रस्ट से सतत शिक्षा पुस्तकमाला के अंतर्गत प्रकाशित पुस्तकें

विश्व पुस्तक मेला अब हर साल

पुस्तकप्रेमियों, लेखकों, प्रकाशकों के लिए खुशखबरी! नई दिल्ली स्थित प्रगति मैदान में नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा आयोजित किया जाने वाला द्विवार्षिक नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला अब से सालाना आयोजन होगा। अब अगला, यानी **21वाँ नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 4 से 10 फरवरी, 2013** की अवधि में आयोजित होगा।

18वाँ दिल्ली पुस्तक मेला सितंबर में

18वाँ दिल्ली पुस्तक मेला **1 से 9 सितंबर, 2012** की अवधि में नई दिल्ली स्थित प्रगति मैदान में आयोजित होने जा रहा है। द फेडरेशन ऑफ इंडियन पब्लिशर्स के सहयोग से इंडिया ट्रेड प्रमोशन ऑर्गेनाइजेशन (ITPO) इस पुस्तक मेले को प्रगति मैदान में हॉल नं. 8 से 12ए तक आयोजित कर रहा है। पुस्तक मेला प्रातः 11 बजे से रात्रि 8 बजे तक चलेगा।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के प्रकाशनों के लिए कृपया हॉल नं. 10 में पधारें।

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन सहयोग : **नरेन्द्र कुमार**

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः nbtindia@nbtindia.org.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **साक्षरता संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 की ओर से सतीश कुमार, संयुक्त निदेशक (उत्पादन) द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित; तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-I, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार के सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070